# संस्कृत साहित्य में स्त्री विमर्श

संपादक
राधावल्लभ त्रिपाठी
आनन्दप्रकाश त्रिपाठी
नौनिहाल गौतम

**Sanskrit Sahitya Mein SthreeVimarsha :** Proceedings of the national seminar held on 29-30 August 2015 at Sagar, organised by Sahitya Akademi with the collaboration of Dr. Harisingh Gour University, Sagar (M.P.) edited by Radhavallabha Tripathi, Anand Prakash Tripathi & Navnihal Goutham, Sahitya Akademi, New Delhi (2021) ₹ 250/-

कॉपीराइट © साहित्य अकादेमी

Copyright © Sahitya Akademi

राधावल्लभ त्रिपाठी (1949) : संपादक
आनन्दप्रकाश त्रिपाठी (1960) : सह संपादक
नौनिहाल गौतम (1984) : सह संपादक

Radha Vallabha Tripathi (1949): Editor
Anand Prakash Tripathi (1960): Editor
Navnihal Goutham (1984): Editor

विधा : संगोष्ठी आलेख
प्रकाशक : साहित्य अकादेमी

Genre: Seminar Papers
Published by Sahitya Akademi

प्रथम संस्करण : 2020
पुनर्मुद्रण : 2021

First Edition : 2020
Reprinted : 2021

मूल्य : दो सौ पचास

Price : ₹ 250/-

ISBN : 978-93-89778-90-8

*सर्वाधिकारः सुरक्षितः। अकादम्याः अनुमतिं विना छायाप्रतिः रिकॉर्डिंग इति वा केनापि अन्यसूचनाभण्डारणेन पुनःप्राप्तिप्रणाल्या च सह केनापि वैद्युता यान्त्रिकेन माध्यमेन वा कस्यापि अंशस्य पुनरुत्पादनमुपयोगः वा कर्तुं न शक्यते।*

**साहित्य अकादेमी**

**प्रधान कार्यालय** : रवींद्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110 001
secretary@sahitya-akademi.gov.in, 011-23386626/27/28
**विक्रय अनुभाग** : 'स्वाति', मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110 001
sales@sahitya-akademi.gov.in, 011-23745297/23364204
**कोलकाता** : 4, देवेंद्रलाल ख़ान रोड, कोलकाता-700 025
rs.rok@sahitya-akademi.gov.in, 033-24191683/24191706
**चेन्नई** : मेन बिल्डिंग, गुना बिल्डिंग्स (द्वितीय तल), 443(304), अन्नासालइ, तेनामपेट, चेन्नई-600 018
chennaioffice@sahitya-akademi.gov.in, 044-24311741
**मुंबई** : 172, मुंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मार्ग, दादर, मुंबई-400 014
rs.rom@sahitya-akademi.gov.in, 022-224135744/24131948
**बेंगलूरु** : सेंट्रल कॉलेज परिसर, डॉ. बी. आर. आंबेडकर वीथी, बेंगलूरु-560 001
rs.rob@sahitya-akademi.gov.in, 080-22245152/22130870

शब्द-संयोजक एवं मुद्रक : विकास कंप्यूटर एंड प्रिंटर्स, ट्रोनिका सिटी, लोनी, ग़ाज़ियाबाद-201102

वेबसाइट : www.sahitya-akademi.gov.in

# अनुक्रम


संपादकीय 5

1. संस्कृत वाङ्मय में स्त्री : वाद, प्रतिवाद तथा शेष प्रश्न 9
*राधावल्लभ त्रिपाठी*

2. स्त्री-विमर्श की वैदिक पृष्ठभूमि 40
*शशिप्रभा कुमार*

3. वैदिक साहित्य में स्त्री 51
*नौनिहाल गौतम*

4. वैदिक एवं वेदोत्तर संस्कृत साहित्य में स्त्री का आर्थिक पक्ष 63
*नागेश दुबे*

5. वैदिकसाहित्ये नारीवाचकशब्दानां वैशिष्ट्यम् 72
*किरण आर्या*

6. प्रमुख स्मृतियों में स्त्री-अधिकार 80
*अभिराज राजेंद्र मिश्र*

7. धर्मशास्त्रों में नारी : सामाजिक मान 96
*उमारानी त्रिपाठी*

8. धर्मशास्त्रों में स्त्री : शिक्षा, अधिकार और कर्त्तव्य 104
*रामहेत गौतम*

9. रामकथा और नारी विमर्श 113
*रहस बिहारी द्विवेदी*

10. वाल्मीकि रामायण में स्त्री 130
*धर्मेंद्र कुमार सिंहदेव*

# वैदिक एवं वेदोत्तर संस्कृत साहित्य में स्त्री का आर्थिक पक्ष

**नागेश दुबे**

प्राचीन भारत में नारियों का आर्थिक स्तर पुरुषों की अपेक्षा गौण रहा है। फिर भी प्राचीन भारतीय समाज में कुलीन नारी-वर्ग के अतिरिक्त साधारण नारियों का भी एक वर्ग था जिसके अंतर्गत सामान्यतः सेवावृत्ति में रहने वाली दासियाँ, अपनी जीविका के लिए धन कमाने वाली रूपजीवाएँ तथा अन्य व्यवसाय करने वाली स्त्रियाँ आती थीं। गृहों में रहने वाली नारियाँ जीवन यापन के दृष्टिकोण से तथा घर की आर्थिक दशा को ठीक करने के लिए विशिष्ट परिस्थितियों में मजदूरी एवं छोटे व्यापार आदि का कार्य करती थीं। ग्रामों में हम मुख्य रूप से नारियों को सार्वजनिक कार्य करते हुए देखते हैं। कृषकों की पत्नियाँ खेतों में जाकर अपने स्वामियों के साथ कार्य करती थीं। फेरी लगाकर वस्तुएँ तथा फूल, साग-सब्जी फलों, जडी-बूटियाँ आदि बेचने वाली नारियों का उल्लेख जातकों में मिलता है। पत्नी अपने पति की साख के आधार पर उसकी ओर से व्यापार और लेन-देन के समझौते कर लेती थीं। स्त्रियाँ कृषि और पशुपालन में सक्रिय रूप से हाथ बंटाती थीं। वे युद्ध सामग्री (धनुष-बाण) बनाने में भी सहयोग देती थीं। वैदिक संहिताओं में रंगने के कार्य, कसीदे के कार्य ओर टोकरी बनाने के कार्य करने वाली स्त्रियों के संदर्भ हैं। स्त्रियाँ गायन, वादन और नृत्यों में भी प्रवीण होती थीं, कुछ राजसभाओं में नृत्यांगनाएँ भी होती थीं। राजसभाओं और रनिवासों में अनेक नारियाँ चंवर डुलाने का कार्य तथा पंखे झलने का कार्य करती थीं। ये राज और रानियों के शृंगार, कार्य में भी सहायक होती थीं। ये उनकी सेविकाएँ हुआ करती थीं। समस्त नारी वर्ग के जीवन के आदर्श एवं नैतिक मर्यादाएँ कुलीन स्त्रियों के आदर्श और मर्यादाओं से भिन्न